

SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)



व्यवस्था की विसंगति एवं मानवीय मूल्य का हनन—‘कोर्ट मार्शल’

प्रत्यूष.पी, शोधार्थी, हिंदी विभाग
श्रीशंकराचार्य संस्कृत विश्वविद्यालय, कालडी, केरल, भारत

ORIGINAL ARTICLE



Corresponding Author

प्रत्यूष.पी, शोधार्थी, हिंदी विभाग
श्रीशंकराचार्य संस्कृत विश्वविद्यालय,
कालडी, केरल, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 23/06/2021

Revised on : -----

Accepted on : 30/06/2021

Plagiarism : 00% on 23/06/2021



Plagiarism Checker X Originality Report

Similarity Found: 0%

Date: Wednesday, June 23, 2021

Statistics: 4 words Plagiarized / 1563 Total words

Remarks: No Plagiarism Detected - Your Document is Healthy.

O:OLfkk dh folaxfr ,oa ekuoh; ewY; dk guu & ^dksVZ ek'kZy* fganH Hkk'kk o lkgR; ds
spqj spkj esa fganH ukVi bxr dk ;ksxku lkguH; gSA ukVi/kehZ - ykx/kehZ tSl; ijaijox
'kSyh' ik'kpkR; ukVi fopkj o fof/k;ka rFkk fganHrj Hkk'kk Is qHkfor ukVi dks Hkgsanq
;qx Is yxHlx ledkyhu dky rd ns[k ldrs gSaA mqqjkUr vusd ledkyhu ukVddkjasa us ukVd ds
dF;] 'kSyh, oa f'kYi esa c'ksx dh uohurk ykdj c'ksx/kehZ ukVi dk c'kjaHk fd;kA ftlesa
loZceq[k gS ^Lons'k nhid'A muds cdkfkr ikjp ukVd gSa - ukVd ^cky Hkoaku*) dksVZ
ek'kZy] tyrk gqvk jFkf lds mnkl dforkj dky dksBjha bu lHkh ukVdksa esa lkef;d thou Is

शोध सार

हिंदी भाषा व साहित्य के प्रचुर प्रचार में हिंदी नाट्य जगत का योगदान सराहनीय है। नाट्यधर्मी—लोकधर्मी जैसे परंपरागत शैली, पाशचात्य नाट्य विचार व विधियां तथा हिंदीतर भाषा से प्रभावित नाट्य को भारतेंदु युग से लगभग समकालीन काल तक देख सकते हैं। तदुपरान्त अनेक समकालीन नाटककारों ने नाटक के कथ्य, शैली एवं शिल्प में प्रयोग की नवीनता लाकर प्रयोगधर्मी नाट्य का प्रारंभ किया, जिसमें सर्वप्रमुख है 'स्वदेश दीपक'। उनके प्रकाशित पाँच नाटक हैं: नाटक 'बाल भगवान', कोर्ट मार्शल, जलता हुआ रथ, सबसे उदास कविता, काल कोठरी। इन सभी नाटकों में सामयिक जीवन से जुड़ी विद्रूपताओं एवं विभीषिकाओं का खुलासा है। कोर्ट मार्शल नाटक के रचना विधान दो अंकों में समेट लिए हैं।

मुख्य शब्द

व्यवस्था, मानवीय मूल्य, कोर्ट मार्शल, स्वादेश दीपक.

नाटक का अध्ययन करने पर पाठक को लगेगा कि नाटककार स्वदेश दीपक ने इसमें 'नाटक के भीतर नाटक' शैली को अपनाए गए हैं, क्योंकि इस नाटक का परिवेश कोर्ट मार्शल का कमरा है। कैप्टन वर्मा की हत्या और कैप्टन कपूर पर कातिलाना हमला किए सवार रामचंद्र का कोर्ट मार्शल चल रहा है। इस पर रामचंद्र के खिलाफ आरोपित मुकदमे की सुनवाई से कारण को जानने का प्रयास करती है। एक पल तक बिकाश राय के अलावा अदालत में मौजूद सभी लोग देखे हुए सच को साबित करने में डटे पड़े हैं। तदुपरान्त बिकाश राय द्वारा ओफीसरी भाईचारे से छुपाए गए सत्य को बाहर लाने पर अनेकों जातिवादी मुखौटा फटती है। सुनवाई के दौरान देखे गए सत्य एवं छिपाए गए सत्य को महज

April to June 2021

www.shodhsamagam.com

A Double-blind, Peer-reviewed, Quarterly, Multidisciplinary and Multilingual Research Journal

Impact Factor
SJIF (2021): 5.948

1804

संवादों में समेटती है। उस संवाद का मंचन पाठकों व दर्शकों के मनोमंडली पर होती हैं।¹ नाटक की कथावस्तु न्याय-व्यवस्था की विसंगतियों को उजागर करने के साथ-साथ, इस तथ्य को भी स्पष्ट करती है कि व्यक्ति के लिए नियम होते हैं, नियमों के लिए व्यक्ति नहीं होता।...सैनिक-जीवन की पृष्ठभूमि में मानवीय संबंधों व मूल्यों के महत्व को दोहराने की चेष्टा की गई है। जाति के नाम पर भारतीय समाज में व्याप्त विसंगतियों तथा न्याय-व्यवस्था की अमीर लोगों के प्रति पक्षधरता के दुष्परिणामों को उजागर किया गया है।¹ इस नाटक के कथावस्तु को मुकदमे के सुनवाई को ध्यान देते हुए गढ़ित किए हैं, इसलिए शेष युगीन नाटकों से अद्वितीय हैं। कोर्ट मार्शल के द्वारा नाटककार स्वदेश दीपक ने जाति-व्यवस्था के साथ न्याय-व्यवस्था की विसंगति पर भी प्रहार किए हैं। मानसिक उत्पीड़न पर आधारित रचना है।

बख्तरबंद रेजिमेंट के मुस्तैद जवान था रामचंदर। दिन-रात शराब पीने के कारण बी.डी कपूर पाँच सौ मीटर की रेजिंग में रामचंदर से हार जाती है। उत्तरी कमांड और इंटर कमांड खेल के लिए तैयार होने में रेजिमेंट के कमांडिंग ऑफिसर ने रामचंदर को दूध और बादाम की अतिरिक्त खुराक देती हैं। रामचंदर को दौड़ की तैयारी करवाने की वादा देते हुए सुबेदार बलवान सिंह को आर्डर देकर कैप्टन कपूर ने रामचंदर को उनका सेवादार बनाते हैं। अरदली बने रामचंदर से कपूर घर का काम करवाती हैं, इसलिए महीने में दो या तीन बार ही अभ्यास कर पाए हैं। सुनवाई के दौरान बिकाश राय ने कपूर से अपने हारने के कारण पर विचार करते हैं। तब कैप्टन कपूर का प्रतिक्रिया निन्द्य एवं क्रुद्ध है: "फौज में भरती होने से पहले रामचंदर गाँव में डंगर चराता था। सारा दिन जानवरों के पीछे दौड़ता होगा। मुझे दौड़ में हराकर वह सुपरमैन तो नहीं बन गया।"² रामचंदर का अव्वल आना कपूर के खानदानी घमंड को लगा चोट था। बी.डी.कपूर का यह रवैया जातिपात से मलिन हुए उसके व्यक्तित्व को साबित करता है। तानाशाही माहौल में निम्न वर्ग के लोगों को पिछड़ेपन में देखकर उन्हें निचोड़कर पले-बड़े बी.डी.कपूर को रामचंदर का जीत असहनीय था। बी.डी.कपूर के संवाद से व्यक्त होता है कि अनेकों ब्राह्मणवादी को राजनीतिक-सामाजिक-धार्मिक तल तक हुई क्रान्तिकारी परिवर्तन आज भी स्वीकार्य नहीं हैं।

एयरफोर्सवालों से हुई रेजिमेंट के हाकी मैच के बीच बेहोश हुए रामचंदर को हवलदार राजसिंह और दो जवानों ने थामकर सिक रिपोर्टिंग के लिए डॉ.गुप्ता के पास लाते हैं। वहाँ मौजूद कैप्टन कपूर रामचंदर को जानीज शब्द से संबोधित करते हुए बेहोशी को बहाना मानते हैं, इसलिए डॉ. कपूर उसका इलाज नहीं करते हैं। रामचंदर के प्रति कपूर के इस मानसिक समस्या पर 'नव-भारत' पत्र में आया कथन विचारणीय है: "व्यक्तिगत ईर्ष्या, प्रतिद्वंद्विता, प्रतिशोध मानवीय गुण है। व्यक्ति की कार्यस्थली क्रिया कलाप उसके मनोवैज्ञानिक से प्रभावित होते हैं। जिससे उसका पारिवारिक माहौल तथा आपसी रिश्ते जुड़े होते हैं। मानव व्यवहार मनुष्य के वातावरण से प्रभावित भी होता है...."³ नाटक में उच्च जात में जन्मे अनेकों ऑफीसर्स हैं। मगर रामचंदर से उन लोगों का व्यवहार मानवीय था। दिन-रात दारु पीने के कारण कपूर का पारिवारिक जीवन विफल हुए तथा रेजिंग में हार गए। इन कारणों से कपूर ने रामचंदर को दुश्मन की छवि दी तथा अपनी पत्नी से जानवर जैसा बर्ताव करने लगता हैं।

कैप्टन कपूर ने दारु के नशे में एशट्रे से अपनी पत्नी के सिर पर मारता हैं। उस समय कपूर का सेवादार रहे रामचंदर ने श्रीमती कपूर को अस्पताल पहुँचाए। जातिवादिता के तरह समाज में फैला जहर है पितृसत्ता। कपूर समाज के उन लोगों का प्रतीक जो नारी को भोग वस्तु मानते हैं। इस तरह के लोगों के कारण घरेलू हिंसा की बढ़ती आंकड़ा भयावह है। दारु में डूबे ऐसे लोग अपने हार व कमी की गुस्सा पत्नी में उतारते हैं।

असल में अफसर की वर्दी तैयार करना व हथियार साफ रखना अर्दली की ड्यूटी है। मगर कपूर जैसे सामंती व्यवस्था को मानने वाले अर्दली से नौकर के तल तक के काम को करवाते हैं। कैप्टन कपूर और कैप्टन वर्मा हमेशा रामचंदर को चूहड़ा और भंगी जैसे गाली पुकारते थे। कैप्टन कपूर के घर में एक दिन कुछ मेहमान आए, उनमें से एक बच्ची ने ड्राईगरूम में पॉटी करती है। कपूर ने रामचंदर से पॉटी साफ करने के लिए कहते हैं, लेकिन रामचंदर इन्कार करता है। इन सभी घटने का जिक्र सुनवाई के दौरान सूबेदार बलवान सिंह करता है। पॉटी उठाने के लिए इन्कार किए रामचंदर से कपूर का व्यवहार खिन्न एवं अतिथा - "(गुस्सैल आवाज में) टट्टी ! रामचंदर ने साहब की

बच्ची की टट्टी उठाने से इन्कार कर दिया। कैप्टन कपूर ने सब मेहमानों के सामने उसे कहा: जात का चूहड़ा और टट्टी उठाने में शर्म आती है ! तुम्हारे पुरखे पुश्तों से हम लोगों की टट्टी की टोकरी सिर पर उठा रहे हैं (उसकी आवाज काँप उठती है)।⁴ अनेक सन्दर्भों में रामचंद्र को गाली कहते हुए खुद सूबेदार बलवान सिंह ने सुना है। इस तरह की खिन्न व कुरूप व्यवहार की गन्दगी को न फैलने तथा झगड़ा निपटने के लिए सूबेदार ने रामचंद्र को कपूर के अर्दली की ड्यूटी से बदल दिए। कई बार ड्यूटी पर तैनात रामचंद्र के पास मोटरसाइकिल रोककर उसे गाली देते हैं। हादसे के रात को भी इसी तरह सभी मर्यादाओं का उल्लंघन करते हुए दोनों ऑफीसर्स रामचंद्र की माँ को गाली देते हैं। इससे रामचंद्र का मानसिक संतुलन टूटता है तथा वह दोनों पर गोली चलाते हैं।

कपूर के पत्नी ने कपूर के खिलाफ एनीमल बिहेवियर पर सी.ओ. को प्रार्थना-पत्र दिए थे। उसी तरह अस्पताल के सी.ओ. ने स्टेटमेंट सुनकर सिविल पुलिस को केस देने के लिए जिद किए थे। मगर रेजिमेंट के कुछ आफीसरों ने भाईचारे के ऊपर केस न देने के लिए मनाए। श्रीमती कपूर को लगी चोट के बारे में रेजिमेंट के सी.ओ. को मिले जानकारी के अनुसार फिसलकर गिरने के कारण हैं। इस पर बिकाश राय का करारा व्यंग्य विचारणीय है कि, “हाँ सर ! ऐसा ही होता है। पैर पत्नी का फिसलता है हमेशा, पति का कभी नहीं। घर की आग भी बड़ी सयानी होती है। हमेशा बहू को लगती है, बेटी को कभी भी नहीं।”⁵ व्यवस्था के अदम्य हालत ने समाज को बड़े लोगों के अन्याय के प्रति आँख बंद करने और छोटे लोगों की शिकायत को दबाने की रीति सिखाए गए हैं। तत्कालीन काल में भी अभिजात वर्ग के कुरीतियों से तड़पती अभिशप्त वर्ग है, लेकिन इस तरह के अन्याय को दबोज कर रखने वाला व्यवस्था बरकरार होने के कारण मानवीयता का घोर हनन हो रहे हैं।

निष्कर्ष

कानून व व्यवस्था पर टिके समाज में अन्याय के खिलाफ व्यक्ति की निजी विरोध व विद्रोह के लिए कोई स्थान नहीं है। न्याय मिलने में होने वाली विलंब पर बिकाश का सवाल चिन्तनीय है: “समाज ने, कानून ने, व्यवस्था ने विरोध प्रकट करने के लिए बना रखे हैं रास्ते। मीलों लंबे रास्ते। इन रास्तों पर चलना शुरू किया जा सकता है। लेकिन प्रश्न तो यह है कि विरोध करने के ये रास्ते क्या कहीं पहुँचते भी हैं ? बिल्कुल नहीं पहुँचते।”⁶ सामाजिक व्यवस्था के ढाँचे में सत्ताधारियों के विरोध को राजनैतिक विरोध तथा दुर्बल लोगों के विरोध को प्रतिशोध कहते हैं। अनसुने व अनदेखे छोटे-छोटे विरोध कालान्तरण में प्राणघातक विस्फोट बनने की संभावनाएँ हैं। संवैधानिक तौर में भारतीयों को बराबर का दर्जा व अधिकार मिले हैं। समाज में व्याप्त सामंती प्रवृत्ति व चिन्तन में बराबर का अधिकार पूर्णतः नहीं है। संवैधानिक काल में भी इस तरह जातीय भेदभाव, उत्पीड़न व अमानवीय व्यवहार आदि व्यवस्था की विसंगतियाँ हैं। स्वतंत्रता पूर्व भारत में शासक वर्ग व सवर्ण-पूँजीवादियों के अलावा सभी दमित विभाग के मूल्यों का हनन होते थे। आज-कल मानवीय मूल्य का हनन प्रत्येक जाति-धर्म-लिंग-राजनीति के आधार पर नहीं होते बल्कि अधिकारहीन सभी व्यक्ति या विभाग पर हो रहे हैं। आशा करता हूँ कि आगामी पीढ़ी में संवैधानिक बराबरी के साथ-साथ सामाजिक तल तक बराबरी का लहर लहराएँ तथा व्यवस्था के विसंगतियों को सुधारकर, जनता जात-पात, धर्म से परे होकर मानवीयता को मूल्य दिया जाए।

सन्दर्भ सूची

1. श्वेता कुमारी, “नाटककार स्वदेश दीपक” पृ. 29।
2. स्वदेश दीपक, “कोर्ट मार्शल” पृ. 84।
3. नव भारत दृ इंदौर, मंगलवार 27 नवंबर 2009।
4. स्वदेश दीपक, “कोर्ट मार्शल” पृ. 78
5. स्वदेश दीपक, “कोर्ट मार्शल” पृ. 65-66।
6. स्वदेश दीपक, “कोर्ट मार्शल” पृ. 91।
